बिस्मार्क की विदेश नीति

यूरोप के इतिहास में बिस्मार्क सबसे आकर्षक व्यक्तियों में से एक था। 19वीं शताब्दी के दौरान जर्मनी के एकीकरण में योगदान देने वाले में मुख्य श्रेय बिस्मार्क को जाता है।

1871 के पश्चात् बिस्मार्क की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य यूरोप में जर्मनी के प्राधान्य को बनाए रखना था। लेकिन इसके लिए आवश्यक था - यूरोप में शांति बनाए रखना। लेकिन बिस्मार्क के अनुसार यूरोप में अशांति के दो कारण हो सकते थे - पहला फ्रांस का असंतुष्ट होना, क्योंकि उससे एल्सेस-लॉरेन के प्रांत छिन लिए गए थे, दूसरा, बाल्कान क्षेत्र में आस्ट्रिया और रूस की प्रतिद्वंद्विता से। इन दोनों में से भी बिस्मार्क को फ्रांस से अधिक भय था क्योंकि फ्रांस 1870 ई० के राष्ट्रीय अपमान को नहीं भूला था। अतः यूरोप की शांति के लिए फ्रांस को कमजोर एवं मित्रहीन करना आवश्यक था। इंगलैंड और फ्रांस के मध्य औपनिवेशिक प्रश्नों पर तनाव था, इसलिए बिस्मार्क इंगलैंड की ओर से निश्चिंत था।

बिस्मार्क की विदेश नीति के उद्देश्य

(1) यूरोप में शांति का वातावरण बनाए रखना - बिस्मार्क यूरोप में शांति स्थापित करने रखने के लिए निरंतर कार्य करता था। अतः वह यूरोप में सैनिक शक्ति का प्रदर्शन नहीं करता था क्योंकि जिन प्रदेशों को

वह जीतना चाहता था उसे जीत चुका था। अब उसका एकमात्र उद्देश्य शांति स्थापित करना तथा औद्योगिक स्थिति को सही ढंग से करना था।

(2) फ्रांस को एकाकी बनाए रखना -
बिस्मार्क चाहता था कि फ्रांस को अकेला रखा जाए। दूसरी ओर फ्रांस अल्सास एवं लॉरेन का प्रदेश वापस लेने के लिए प्रयत्नशील था।

(3) जर्मनी साम्राज्य के पक्ष में गुटों का निर्माण करना -
बिस्मार्क रूस से मित्रता करना चाहता था, क्योंकि अगर वह रूस से मित्रता नहीं करता है तो रूस फ्रांस से मित्रता कर लेगा।

त्रिसम्राट संघ का निर्माण -
बिस्मार्क को आशंका थी कि कहीं आस्ट्रिया और फ्रांस मिलकर उसके ऊपर आक्रमण न कर दें। अतः सन 1872 ई० में बर्लिन में आस्ट्रिया-हंगरी के सम्राट फ्रांसिस जोसेफ, रूस के जार एलेक्जेंडर II एवं जर्मनी के सम्राट कैसर विलियम के मध्य एक समझौता किया गया एवं त्रिसम्राट संघ का निर्माण किया गया। यह कोई लिखित संधि नहीं थी, मात्र एक समझौता था।

संघ का निर्णय -
1) 1871 ई० की की गई विदेश नीति की व्यवस्था को तीनों सम्राट महत्वपूर्ण समझेंगे।
(2) तीनों सम्राट मिलकर क्रांतिकारी समाजवाद

Date

को हानि करेगा जिससे की रूसी सत्ता का विरोध नहीं।

3) बाल्कन प्रायद्वीप की समस्या जो बार-बार प्रकट होती है उसको पारस्परिक सहयोग के साथ समाप्त करने का प्रयत्न करेगा।

संधि का महत्व — यूरोप में इस संधि का अत्यधिक महत्व रहा। फ्रांस को एकाकी बनाए रखने के लिए यह संधि आवश्यक सिद्ध हुई। आस्ट्रिया एवं रूस से बिस्मार्क ने समझौता कर लिया ताकि बाल्कन प्रायद्वीप की शांति भंग न हो सके। इससे यूरोप में जर्मनी की प्रधानता हो गई और यूरोप की राजनीति का केन्द्र बिस्मार्क बन गया।

संघ की समाप्ति — 1886 ई० तक यह संघ ~~बिना~~ बिना किसी बाधा के चलता रहा, लेकिन यह संघ स्थायी रूप से नहीं चल सका। फ्रांस ने अपनी आंतरिक समस्याओं को सुलझाया और सैनिक शक्ति का विकास किया। इसी समय, बाल्कन समस्या का उदय हुआ। आस्ट्रिया सर्बिया और सेलोनिका पर अधिकार करना चाहता था, इधर रूस चाहता था कि तुर्की का अंत कर दें रूस आस्ट्रिया को हटाकर बाल्कन प्रायद्वीप पर अधिकार करना चाहता था। आस्ट्रिया ने बोस्निया और हर्जेगोविना को अपने अधिकार में कर लिया। रूस के विवादों को हल करने के लिए बर्लिन सम्मेलन बुलाया गया। जर्मनी के बिस्मार्क की अध्यक्षता में सम्मेलन सम्पन्न हुआ। लेकिन इस सम्मेलन में रूस के हितों

Page No

Date ___/___/___

की अवहेलना की गई और आस्ट्रिया के हितों की रक्षा की गई। जर्मनी के इस व्यवहार से रूस असंतुष्ट होकर कुछ भी कार्यवाही दे दी। यहीं से संघ की समाप्ति हुई।

ऐसी परिस्थिति में जर्मनी को रूस एवं फ्रांस की ओर से भयंकर खतरा उत्पन्न हो गया। ऐसे आशंका थी कि रूस और फ्रांस परस्पर संधि कर आक्रमण कर दे। इसलिए 7 अक्टूबर 1879 ई० में एक रक्षात्मक संधि हुई, जो त्रिगुट के नाम से विख्यात है।

संधि की शर्तें —

1 — यदि जर्मनी आस्ट्रिया में से किसी एक पर आक्रमण करे तो दोनों एक दूसरे को सम्पूर्ण सैनिक सहायता प्रदान करेंगे और दोनों परस्पर संधि सहयोग से तय करेंगे।

2. जर्मनी आस्ट्रिया में से किसी एक पर यदि कोई अन्य देश शक्ति आक्रमण करेगा तो दूसरा मित्र उसका सहयोग करेगा और यदि शत्रु को किसी अन्य शत्रु की सहायता प्राप्त होगी तो दोनों मित्र सम्मिलित रूप से युद्ध एवं संधि करेंगे।

त्रिगुट संगठन का निर्माण —

आस्ट्रिया और इटली की शत्रुता का इतिहास पुराना था किंतु ट्यूनिस, तुर्की पर इटली फ्रांस के खिलाफ था। इन परिस्थितियों में बिस्मार्क ने अपनी कूटनीतिक चतुराई से इटली को जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ मिलकर एक "त्रिगुट" के निर्माण के लिए राजी कर लिया। यह संधि भी सुरक्षात्मक संधि थी।

Date ___/___/___

पुनराश्वासन संधि – 1887 ई० में रूस के साथ 'पुनराश्वासन संधि' की जिसका मुख्य लक्ष्य, रूस का फ्रांस से घनिष्ठ संबंध स्थापित नहीं होने देना था। रूस में बिस्मार्क विरोधी लहर होने के बावजूद बिस्मार्क ने रूस के साथ मित्रवत् सम्बन्ध को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

ब्रिटेन के प्रति बिस्मार्क का नजरिया:

उस समय ब्रिटेन यूरोपीय राजनीति में अलगाव की नीति का अनुसरण कर रहा था। बिस्मार्क को अहसास था कि यदि ब्रिटेन की नौसेना की श्रेष्ठता को चुनौती न दी जाए तो वह किसी राष्ट्र का विरोधी नहीं होगा। अतः ब्रिटेन को खुश करने के लिए बिस्मार्क ने जर्मनी नौ-सेना को बढ़ाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया। उसने औपनिवेशिक विस्तार भी इंगलैंड की सदिच्छा प्राप्त करके ही किया।

इस प्रकार बिस्मार्क ने अपनी कुशल कूटनीति से फ्रांस को मित्रविहीन करने की पुरजोर कोशिश की और इसमें उसे काफी सफलता मिली। परंतु, 1890 में बिस्मार्क के पदत्याग के पश्चात् फ्रांस की कूटनीति सक्रिय हो गई और वह मात्र 4 वर्षों में (1894 ई०) में रूस के साथ मैत्री संधि करकर द्विगुट बनाने में सफल हो गया। जर्मनी के त्रिगुट (जर्मनी-आस्ट्रिया-इटली) के विरुद्ध बने फ्रांस-रूस द्विगुट के पश्चात् तो संपूर्ण यूरोप दो सशक्त और शक्तिशाली गुटों में बँट गया। इसलिए कुछ इतिहासकार बिस्मार्क की गुटबंदी की नीति को ही प्रथम विश्वयुद्ध का कारण मानते हैं, क्योंकि इसी नीति के कारण प्रतिद्वंद्वी गुटबंदी का निर्माण हुआ, जो अन्ततः विश्वयुद्ध का आधार बनी।

Date __/__/

बिस्मार्क का मूल्यांकन

19 वीं शताब्दी के यूरोपीय इतिहास में बिस्मार्क न केवल जर्मनी का अपितु संपूर्ण यूरोप का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली राजनीतिज्ञ था। प्रशा की शक्ति उसके जीवन का आदर्श रही थी। अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु बिस्मार्क ने छल-कपट, सभी अनैतिक साधनों का प्रयोग किया। रक्त और लौह की नीति का अनुयायी भी बिस्मार्क सैनिकवादी होने के साथ ही चतुर कूटनीतिज्ञ भी था। अपने शत्रु को मित्र हीन बनाकर युद्ध करना उसकी नीति का प्रधान सिद्धांत था। छल और शक्ति दोनों उसकी कूटनीति के प्रमुख तत्व थे तथा फूट डालना एवं शासन करना की विदेश नीति का अनुसरण करना उसके नीति का अंग था।

उसकी राजनीति मात्र जर्मनी और यूरोप के लिए थी। यूरोप के इतिहास में बिस्मार्क का पतन एक नए युग का प्रारंभ था। मैरियट ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, "19वीं शताब्दी के इतिहास में वह सदैव उच्च स्थान पर रहेगा।"

Page No.